Dr Tapati Mukherjee
Associate Prof
Music Dept
Rohtas Mahila College, Sasaram

B.A Part II (Hons)

टिप्पणी | **Short Note** · **Defination (परिभाषा)**

(1) **कण और मुर्की** - गाते-बजाते समय जब हम आगे या पीछे के स्वर को स्पर्श मात्र करें तो स्पर्श किये गये स्वर को कण स्वर कहते हैं।

दूसरे शब्द में हम यह भी कह सकते हैं कि, जिस स्वर का प्रयोग कम या तृण मात्र हो उसे कण स्वर कहते हैं, अथवा स्पर्श किये गये स्वर की मात्रा हम अनुमान से ही लगा सकते हैं। कण स्वर को "स्पर्श स्वर" भी कहते हैं।

कण स्वर दो प्रकार के होते हैं

(a) पूर्व लगन कण

(b) अनु लगन कण

(a) पूर्व लगन कण स्वर का प्रयोग मूल स्वर से पहले किया जाता है, जैसे रे ग, यहाँ गांधार स्वर को प्रयोग के पूर्व रिषभ स्वर का कण लिया गया है।

(b) अनुलगन स्वर का प्रयोग मूल स्वर के बाद किया जाता है जैसे सा ग म

मुर्की - यह भी एक प्रकार का कण है। इसमें तीन स्वरों के द्रुत प्रयोग द्वारा अर्धवृत्ति बनाते हैं, जैसे - रेनिसा, या पसमप.